BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

भारत में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति: वर्तमान स्थिति, समस्याएं एवं समाधान

प्रशान्त कुमार झा
शोध छात्र
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

शोध सार:

"नारी तुम श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पद तल में।पीयूष स्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।।" भारतीय हिन्दी साहित्य में, छायावाद के महान कवि जयशंकर प्रसाद की उपरोक्त पंक्तियां नारी की महत्ता एवं विशेषता को बखूबी प्रदर्शित करती है। लेकिन, प्रसाद के देश में ही, महिलाओं पर हो रहे अत्याचार पर नजर डालते हैं, तो नारी का 'अबला' स्वरूप दिखने लगता है। एक आंकड़े के मुताबिक, भारत में, नारी के साथ हर 15 मिनट में एक छेड़छाड़, हर 23 मिनट में एक अपहरण, हर 29 मिनट में एक रेप और हर 77 मिनट में एक दहेज हत्या की वीभत्स घटना घट रही है। दरअसल, पिछले कुछ वर्षों में, अपने देश भारत में, महिलाओं के प्रति सोच का बहुत तेजी से पतन हुआ है।1 नारी को संसार का 'बहुमूल्य रत्न' कहा गया है। संस्कृत के आचार्य शारंगधर ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि, "नारियां ही भूषणों को भूषित कर सकती हैं, भूषण उन्हें भूषित नहीं करते।" नारी में माँ की आत्मा छिपी है, जो अपनी ममता लुटाने के लिए सदा-सर्वदा अधीर रहती है; उसमें पत्नीत्व का गरिमामय निवास है, जो नाव के पाल की तरह अहर्निश गृहस्थी को खेने वाले पति को सर्वात्मना सहयोग देने के लिए तत्पर रहता है। उसमें बहन का स्नेह हिलोरें मारता रहता है, जो कैसे आड़े समय में भाई को शौर्य के कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। इन सबसे बढ़कर उसमें क्षमा, दया, त्याग और शान्ति का वह अजस्र स्रोत निरंतर प्रवाहित होता रहता है, जिसमें वह अपने स्वजनों और परिजनों को कृतार्थ कर देना चाहती है। घोर विडंबना है कि इस आधी-आबादी पर नाना प्रकार के जुल्म ढाये जा रहे हैं। नारी की पराधीनता, उत्पीड़न, शोषण की घटनाएं 21वीं सदी में भी बदस्तूर घट रही हैं। वैसे, भारतीय समाज के साथ-साथ पूरे विश्व के परिदृश्य पर महिलाओं ने खासी प्रगति की है। लेकिन, कुछ प्रतिशत महिलाओं को छोड़ दिया जाए, तो अधिकांश महिलाएं अपने घर के भीतर रहकर अपना और अपने बच्चे के भरण-पोषण करने की दुनिया में ही सिमटी हुई है। कुछ प्रतिशत महिलाएं असंगठित क्षेत्रों में काम में लगायी जाती तो हैं, लेकिन उन्हें वहां अपने आत्मसम्मान का गला घोटकर मजबूरन काम करना पड़ता है। जायज मेहनताना एवं उचित सम्मान दिलाने वाला तंत्र, महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ने के बजाय अपने निहित स्वार्थों की वजह से चुप्पी साधे रहता है।

कुंजी शब्द: नारी शिक्षा, शैक्षिक स्थिति, शैक्षिक असमानता, सामाजिक न्याय

❖ परिचय

भारत में महिला शिक्षा की स्थिति पिछले कुछ दशकों में धीरे-धीरे सुधार की ओर बढ़ी है, लेकिन अब भी यह कई चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय समाज में महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा गया था, और उनका स्थान घरेलू कार्यों तक सीमित था। हालांकि, स्वतंत्रता के बाद से महिला शिक्षा के लिए कई योजनाएँ और नीतियाँ बनाई गईं, जैसे कि "बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ" अभियान, लेकिन अब भी कई ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में महिलाएँ शिक्षा से वंचित हैं। लैंगिक भेदभाव, आर्थिक असमानता, सामाजिक दबाव, बाल विवाह, और पारंपरिक सोच जैसी बाधाएँ महिला शिक्षा

@2025 Bihar Shodh Samaagam

की राह में रुकावट डालती हैं। फिर भी, आज महिलाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है, और वे उच्च शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, राजनीति, और समाज सेवा जैसे क्षेत्रों में भाग ले रही हैं। इस संदर्भ में, महिला शिक्षा की स्थिति में और सुधार की आवश्यकता है, ताकि भारत में हर महिला को समान अवसर और शिक्षा मिल सके। सन् 1963 के वनस्थली विद्यापीठ में वक्तव्य देते हुए देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी इस बात को दोहराया था कि लड़के की शिक्षा केवल एक व्यक्ति की शिक्षा है, परन्तु, एक लड़की की शिक्षा सम्पूर्ण परिवार की शिक्षा है।2 उपरोक्त विवेचन से आधी आबादी के लिए शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व स्पष्ट होता है, लेकिन स्त्री शिक्षा इतनी आवश्यक होते हुए भी उपेक्षित है। इसलिए महिलाओं के सामने यह एक जटिल समस्या एवं चुनौती के रूप में उभरकर सामने आयी है। शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि सभी दृष्टियों से महिलायें अभी भी पिछड़ी हुई हैं। कानूनी और संवैधानिक दृष्टि से अनेक अधिकार प्राप्त होने और योजनागत विकास कार्यक्रमों के प्रावधानों के बावजूद नारियों की परिस्थिति शोचनीय ही है। स्वामी विवेकानन्द के मुताबिक कोई राष्ट्र तब तक अपना पूर्ण विकास नहीं कर सकता जब तक कि उसका प्रत्येक नागरिक राष्ट्र के विकास में भागीदार नहीं बनता। इस प्रकार स्त्री एक अच्छे समाज और अच्छे राष्ट्र का स्रोत होती है। विद्या से ही व्यक्ति संकीर्ण मानसिकता और रूढ़िवादिता की जंजीरों को तोड़ सकता है। यदि स्त्री शिक्षित है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। शिक्षा ही हमें सामाजिक भेदभावों और ऊँच-नीच की भावनाओं से उबारने का काम करती है।3 इसलिये स्त्रियों का शिक्षित होना बहुत आवश्यक हो जाता है क्योंकि उसके विचार ही उसके बच्चे होते है अगर वह अपने बच्चों को इन रूढ़िगत विचारों से दूर रखे और यह बताये कि कोई छोटा या बड़ा नहीं होता। व्यक्ति के कार्य और विचार ही उसे छोटा या बड़ा बनाते हैं। यदि माता अपने बच्चों में जाति-भेद और धर्म-भेद रहित विचारों का बीजारोपण करें, तो आगे चलकर वह एक ऐसा वृक्ष बनेगा जिसमे सामाजिक समरसता से पूर्ण फल लगेंगे, जो बिना किसी भेदभाव के छाया भी प्रदान करेगा।

इस प्रकार एक शिक्षित स्त्री एक शिक्षित देश को जन्म देती है। यदि हम इतिहास पर नजर डालें, तो हमें ऐसी बहुत सी विदुषी स्त्रियों के नाम मिल जायेंगे जिन्होंने अपनी विद्वता का लोहा मनवाया था और इस प्रकार इतिहास में अपना नाम अमर करवा लिया था। ऐसी स्त्रियों में अपाला, घोषा, गोपा, सावित्री, मैत्रेयी और गार्गी जैसी अन्य अनेक स्त्रियों के नाम मिलते है, जिन्होंने विद्यार्जन कर स्त्रियों के अस्तित्व को गौरव प्रदान किया था। उनकी शक्ति थी उनकी विद्या, लेकिन बाद के समय में उनकी यह शक्ति उनसे छीनी जाने लगी। उन्हें विद्या से रहित कर दिया गया और यही उनकी स्थिति की अवनति का कारण बना। देखा जाये तो आज भी वो स्थिति प्राप्त नहीं कर पाई है। हालांकि, कुछ हद तक उसने अपने को उबारा है, लेकिन अभी भी पूर्णरूपेण उन्नति होना बाकी है। सामाजिक कुरीतियों का उसे शिकार बनाया गया। बाल-विवाह के कारण शिक्षा उससे छिन गई और तब यह केवल सभ्रान्त परिवारों की स्त्रियों तक ही सीमित हो गई या पुरुष की संकीर्ण मानसिकता, स्त्री को शिक्षा से वंचित होना पता जिसके कारण वह पर्दा प्रथा, सती प्रथा, नियोग-प्रथा आदि अनेक बुराईयों की बेडिया काटने में असक्षम हो गई क्योंकि उसका हथियार शिक्षा उससे छीना जा चुका था। शिक्षा जो कि सिर्फ सर्वांगीण विकास ही नहीं करती बल्कि हमें समाज में व्याप्त बुराईयों से लड़ने की शक्ति भी प्रदान करती है। वो हमे अपने अधिकारों के प्रति सचेत करती है।4 वर्तमान समय की बात करें, तो आज नारियों की अधिकांश समस्याओं का कारण आर्थिक रूप से दूसरे पर निर्भरता है। यह अत्यंत चिंतनीय है कि भारत की कुल आबादी में 48 प्रतिशत महिलाएँ हैं, जिसमें से मात्र एक-तिहाई महिलाएँ रोजगार में जुटी हैं। इस कारण से देश की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में महिलाओं का योगदान महज 18 फीसदी ही है।

@2025 Bihar Shodh Samaagam

यदि परिवार के भीतर और बाहर महिलाओं के साथ होने वाले भेदभावों को समाप्त कर पुरुषों के समान अर्थव्यवस्था में भागीदारी करने के अवसर प्रदान किए जाएं, तो अन्य महिलाएँ भी गीता गोपीनाथ, इंद्रा नुई, किरण मजूमदार शॉ की तरह सशक्त होंगी, साथ ही देश भी आर्थिक मोर्चे पर तेजी से प्रगति करेगा। नारी सशक्तिकरण के लिए हमें अपनी सोच में परिवर्तन करना होगा। राष्ट्र के निर्माण में लगी सारी संस्थाएं; चाहे वो शिक्षण संस्थान हों, तकनीक का क्षेत्र हों, न्यायिक व्यवस्था हो, कॉर्पोरेट घराने हों या प्रशासन से जुड़ी संस्थाएं; उन्हें यह मानकर चलना होगा कि महिला सशक्तिकरण के बगैर आप अपने-अपने क्षेत्र में स्वस्थ विकास की कल्पना नहीं कर सकते। आज संसार में वो सारी संस्थाएं विकास के पथ पर अग्रणी हैं, जिन्होंने पुरूष एवं महिला; दोनों को उचित एवं समान अवसर तथा सम्मान दिया। इन सब प्रयासों के अतिरिक्त यदि महिला सशक्तिकरण को और तेज करना हो, तो इस युग की सास एवं माताओं को अपनी बहुओं को 'कुलटा' जैसे अपशब्द कहने बन्द करने होंगे। दहेज जैसे क्षुद्र उपहार के लिए बहू को प्रताड़ित करना पूर्णतः बन्द करना होगा। लिंग परीक्षण पूरी तरह से बंद करवाकर नारी सभ्यता को कलंकित होने से बचाना होगा और पुरूष समाज को अपने कृत्यों के माध्यम से व्यवहार और आचरण से ऐसा आदर्श प्रस्तुत करना होगा, जिससे स्त्री समुदाय अपनी महत्ता पर गर्व कर सके। तभी नारी की समुचित प्रगति संभव हो पाएगी।

❖ वर्तमान भारत में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति

आधुनिक भारत में महिला शिक्षा की स्थिति में पिछले कुछ दशकों में काफी सुधार हुआ है, लेकिन अभी भी कई चुनौतियाँ हैं। महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार और समाज दोनों स्तरों पर प्रयास किए जा रहे हैं, फिर भी समाज में कई परंपरागत और सांस्कृतिक समस्याएँ बनी हुई हैं। भारत में महिला साक्षरता दर में लगातार वृद्धि हो रही है। 2011 की जनगणना के अनुसार, महिला साक्षरता दर 65.46% थी, जो अब बढ़कर और बेहतर हो चुकी है। खासकर शहरी इलाकों में महिलाएँ शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, और अधिक महिलाएँ स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाई कर रही हैं। "बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ" जैसी योजनाओं ने महिला शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाई है और परिवारों को अपनी बेटियों को पढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। सरकार ने महिलाओं के लिए कई स्कॉलरशिप, छात्रवृत्तियाँ, और विशेष प्रोत्साहन योजनाएँ बनाई हैं, ताकि वे शिक्षा में भाग ले सकें और आगे बढ़ सकें। समाज में बदलाव लाने और विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पिछले कुछ दशकों में महिलाओं की शिक्षा में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है, लेकिन फिर भी कई सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक बाधाएँ हैं। आइए, विस्तार से देखें कि महिलाओं की शैक्षिक भागीदारी का क्या महत्व है और इसमें क्या चुनौतियाँ हैं।

❖ चुनौतियाँ

"लैंगिक भेदभाव" के रूप में ग्रामीण इलाकों में आज भी लड़कियों को शिक्षा देने के बजाय घर के कामकाज में लगाया जाता है। कई जगहों पर शिक्षा को लेकर पारंपरिक सोच हावी है। "बाल विवाह" बाल विवाह की समस्या भी महिलाओं की शिक्षा में एक बड़ी बाधा है। शादी के बाद लड़कियाँ पढ़ाई को छोड़ देती हैं और घरेलू जीवन में व्यस्त हो जाती हैं। "आर्थिक स्थिति" आर्थिक तंगी के कारण कई परिवार अपनी बेटियों को स्कूल नहीं भेज पाते हैं और उनका ध्यान मुख्य रूप से घर के कामों में ही रहता है। "स्कूलों तक पहुँच" कुछ ग्रामीण और आदिवासी इलाकों में स्कूलों तक पहुँच की समस्या बनी रहती है, जहां लड़कियाँ शिक्षा पाने से वंचित रहती हैं। "महिला शिक्षा में बदलाव" महिला शिक्षा में बदलाव और सुधार आ रहे हैं। अधिक से अधिक महिलाएँ विज्ञान, गणित, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, कानून, राजनीति, और अन्य क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रही हैं। महिलाएँ न केवल शिक्षा प्राप्त

कर रही हैं, बल्कि कई सरकारी और निजी संस्थाओं में महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं। आधुनिक तकनीक का प्रभाव ऑनलाइन शिक्षा” इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने महिलाओं के लिए शिक्षा के नए द्वार खोले हैं। अब महिलाएँ घर बैठे भी ऑनलाइन कोर्स कर सकती हैं और अपनी शिक्षा जारी रख सकती हैं। “मोबाइल फोन और इंटरनेट का उपयोग” शिक्षा के लिए मोबाइल और इंटरनेट का उपयोग बढ़ा है, जिससे महिलाओं को दूरदराज के क्षेत्रों में भी शिक्षा मिल रही है। समाज में महिलाओं की शिक्षा को लेकर मानसिकता बदल रही है। अब अधिक परिवार अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा देने के लिए उत्साहित हैं। महिलाएँ अब खुद को सशक्त महसूस कर रही हैं और समाज में अपनी भूमिका को पहचानने लगी हैं आधुनिक भारत में महिला शिक्षा में प्रगति हुई है, लेकिन इसे और भी बेहतर बनाने के लिए सामाजिक जागरूकता, सरकारी योजनाओं का सही तरीके से कार्यान्वयन, और आर्थिक मदद की आवश्यकता है। महिला शिक्षा केवल महिला सशक्तिकरण के लिए नहीं, बल्कि समाज के समग्र विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है।

❖ शिक्षा से जुड़ी समस्याएं

शिक्षा से जुड़ी समस्याएँ भारतीय समाज के लिए एक बड़ी चुनौती बनी हुई हैं। सबसे प्रमुख समस्या शिक्षा की गुणवत्ता की है, जहाँ शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में असमानता देखी जाती है। ग्रामीण इलाकों में स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं की कमी है, जैसे योग्य शिक्षक, शौचालय और पुस्तकालय। इसके अलावा, आर्थिक कारणों से गरीब परिवारों के बच्चों को अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाते, क्योंकि उन्हें घर की जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं या वे काम करने लगते हैं। लैंगिक भेदभाव भी एक बड़ी समस्या है, विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में लड़कियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता है। इसके अलावा, बाल विवाह और सामाजिक दबाव भी लड़कियों की शिक्षा में रुकावट डालते हैं। शिक्षा की लागत भी कई बार एक बाधा बन जाती है, जहाँ अच्छे स्कूलों की फीस उच्च होती है, जिससे कई परिवारों के लिए बच्चों को पढ़ाना संभव नहीं होता। दूसरी ओर, डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में भी डिजिटल डिवाइड की समस्या है, क्योंकि ग्रामीण और गरीब इलाकों में इंटरनेट और स्मार्टफोन जैसी सुविधाएँ सीमित हैं। इस तरह की समस्याओं का समाधान करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधार की आवश्यकता है, ताकि हर बच्चे को समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके।

❖ समाधान हेतू सुझाव

शिक्षा से जुड़ी समस्याओं का समाधान विभिन्न उपायों से किया जा सकता है। सबसे पहले, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षकों का नियमित प्रशिक्षण आवश्यक है, ताकि वे आधुनिक शिक्षण विधियों से अवगत हों। पाठ्यक्रम को व्यावहारिक और रचनात्मक बनाने की जरूरत है, ताकि छात्र वास्तविक जीवन के लिए तैयार हो सकें। आर्थिक बाधाओं को दूर करने के लिए अधिक स्कॉलरशिप और वित्तीय सहायता प्रदान की जानी चाहिए, विशेष रूप से गरीब और कमजोर वर्ग के बच्चों के लिए। लैंगिक समानता सुनिश्चित करने के लिए लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने वाली योजनाओं को और सशक्त बनाया जाना चाहिए, और समाज में जागरूकता फैलानी चाहिए। बाल विवाह जैसी सामाजिक समस्याओं को रोकने के लिए कानूनी और सामाजिक प्रयासों को तेज किया जाना चाहिए। डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए इंटरनेट और तकनीकी सुविधाओं की सुलभता बढ़ानी होगी, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं की कमी को दूर करने के लिए सरकार और निजी संस्थाओं को मिलकर प्रयास करना चाहिए, ताकि हर स्कूल में आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हों। अंततः, समाज में शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूकता

फैलाना और प्रेरणादायक उदाहरणों को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि लोग शिक्षा के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझें। इन सभी उपायों को एक साथ लागू करने से हम शिक्षा की समस्याओं का प्रभावी समाधान कर सकते हैं और हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अवसर प्रदान कर सकते हैं।

❖ **निष्कर्ष:**

भारत में महिला शिक्षा की स्थिति में पिछले कुछ दशकों में सुधार हुआ है, लेकिन यह अभी भी कई चुनौतियों का सामना कर रही है। महिलाओं को शिक्षा के समान अवसर देने के लिए सरकार और समाज ने कई प्रयास किए हैं, जैसे बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ जैसी योजनाएँ, लेकिन ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा में अभी भी भिन्नताएँ हैं। आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ महिला शिक्षा की प्रगति में रुकावट डालती हैं, जैसे बाल विवाह, लैंगिक भेदभाव, और पारंपरिक सोच। हालांकि, महिला शिक्षा में वृद्धि हो रही है, और महिलाएँ अब विज्ञान, तकनीकी, राजनीति, और समाज सेवा जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। यदि इन समस्याओं पर ध्यान दिया जाए और महिला शिक्षा को और अधिक प्रोत्साहित किया जाए, तो भारत में महिला सशक्तिकरण की दिशा में और भी मजबूत कदम उठाए जा सकते हैं। संक्षेप में, महिला शिक्षा की स्थिति में सुधार की उम्मीद है, लेकिन यह समाज के सभी वर्गों के सामूहिक प्रयासों से ही संभव होगा। शिक्षा से जुड़ी समस्याओं का समाधान केवल सरकारी नीतियों से नहीं, बल्कि समाज, परिवार और प्रत्येक व्यक्ति के प्रयासों से संभव है। यदि हम शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता, समानता, और बुनियादी सुविधाओं पर ध्यान केंद्रित करें, तो हम एक ऐसे समाज की ओर बढ़ सकते हैं जहाँ हर बच्चा, चाहे वह किसी भी जाति, वर्ग, या लिंग से हो, समान अवसरों के साथ शिक्षा प्राप्त कर सके। समाज में जागरूकता फैलाना, बाल विवाह जैसी सामाजिक समस्याओं का समाधान करना, और डिजिटल शिक्षा की पहुँच बढ़ाना ऐसे कदम हैं, जो महिला और पुरुष दोनों के सशक्तिकरण में सहायक होंगे। इन सभी प्रयासों से हम एक सशक्त, समावेशी और प्रगतिशील समाज की ओर अग्रसर हो सकते हैं, जहाँ शिक्षा सभी के लिए उपलब्ध और समान हो।

<u>संदर्भ-सूचीः</u>

1. शर्मा, संदीप. (2016). *महिलाओं के अधिकार*. साधना पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 45.
2. सिंह, वी.एन., & सिंह, जनमेजय. (2018). *नारीवाद*. रावत पब्लिकेशन, कोलकाता, पृष्ठ 33.
3. विवेकानंद, स्वामी. (2006). *भारतीय नारी*. रामकृष्ण मठ, कोलकाता, पृष्ठ 25.
4. दुबे, विमल., विश्वकर्मा, ईश्वरशरण., & नाथ, दिग्विजय. (2018). *नारीः अतीत से वर्तमान तक*. प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 43.